**ओ३म्**

**‘ऋषि-भक्त वेद विदुषी आचार्या सूर्यादेवी से अजमेर में भेंट एवं वार्तालाप’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 आर्य समाज के सभी विद्वान एवं विदुषी बहिनें आचार्या सूर्यादेवी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित हैं। आपकी शिक्षा दीक्षा आचार्या प्रज्ञादेवी जी के वाराणसी स्थित जिज्ञासु स्मारक पाणिनी कन्या गुरुकुल में सम्पन्न हुई है। हमें 6-8 दिसम्बर, वर्ष 1996 में आयोजत इस गुरुकुल के रजत जयन्ती समारोह में जाने का अवसर मिला था। वहां पहली बार वेद विदुषी आदरणीय बहिन सूर्यादेवी जी के हमने दर्शन किये थे। उनसे वार्तालाप भी किया था और उस जानकारी के आधार पर एक संक्षिप्त लेख लिखा था जो जालन्धर से प्रकाशित आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के साप्ताहिक मुख पत्र में प्रकाशित हुआ था। बहिन जी आर्यजगत् की वेदों की उच्च कोटि की विदुषी देवी हैं। आपने वेदों से संबंधित कुछ विद्वानों की शंकाओं के समाधान में भी पुस्तकों की रचना की है। आपकी कुछ पुस्तकें भी हमारे पास हैं जिनमें से एक है **‘त्रिपदी गौ’**। विगत लम्बे समय से हम आपके वैदुष्य से पूर्ण लेखों को आर्य जगत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ते आ रहे हैं। एक बार ऋषि जन्मभूमि टंकारा में भी हमनें बहिन मेधा देवी जी एवं गुरुकुल की कुछ ब्रह्मचारियों के साथ आपके दर्शन किये थे। देहरादून के मानव कल्याण केन्द्र वा द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल एवं श्री मद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा, देहरादून में भी आपके दर्शन करने व प्रवचन सुनने का सौभाग्य हमें अनेक बार मिला है। विगत दिनों हमें पता चला था कि आप परोपकारिणी सभा, अजमेर के निवेदन पर ऋषि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य के सम्पादन आदि विषयक कुछ वृहत कार्य कर रही हैं। आपकी अनुजा बहिन धारणा जी शिवगंज राजस्थान में कन्याओं का एक गुरुकुल चलाती हैं। आप भी वाराणसी स्थित डा. प्रज्ञादेवी जी के गुरुकुल से स्नातिका हैं। धारणा बहिन जी को इस वर्ष परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित ऋषि मेले के कार्यकम में सम्मानित भी किया गया है जिसमे हम भी सम्मिलित थे। बहिन धारणा जी को गुरुकुल के संचालन में आचार्या सूर्यादेवी जी का पूरा सहयोग मिलता है। बहिन सूर्यादेवी जी का अधिकांश समय गुरुकुल में अध्ययन वा अध्यापन में ही व्यतीत होता है। हम अपने ज्ञान व अनुमान के आधार पर मानते हैं कि आप वेदों व वैदिक साहित्य की अधिकारी विदुषी देवी हैं। हमारा यह भी मानना है कि आपका यह गुरुकुल देश के कुछ गिने चुने कन्या गुरुकुलों में अन्यतम है। आर्य बन्धुओं का कर्तव्य है कि बहिन सूर्यादेवी जी को सभी प्रकार के दायित्वों से मुक्त रखने के लिए उनकी गतिविधियों में अधिकाधिक सहयोग करें ओर उनसे उनकी योग्यता के अनुसार आर्यसमाज के वर्तमान व भविष्य की दृष्टि से उत्तम व महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करायें।

हमें लगता है कि बहिन सूर्यादेवी जी में वेदों का भाष्य करने की दक्षता है। ऋषि दयानन्द जी के बाद उनके अन्य अनुयायियों वा शिष्यों ने चारों वेद, किसी एक वेद व वेद के किसी भाग पर भाष्य व टीकायें आदि लिखी हैं। हमारे यह सभी विद्वान पुरुष वर्ग से ही हैं। ऋषि दयानन्द जी के बाद वेदभाष्य करने वालों में श्री हरिशरण सिद्धान्तालंकार, श्री जयदेव विद्यालंकार, पं. आर्यमुनि जी, स्वामी ब्रह्ममुनि जी, पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ, पं. तुलसी राम स्वामी, पं. विश्वनाथ विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड, डा. रामनाथ वेदालंकार विद्यामार्तण्ड, पं. क्षेमकरण दास त्रिवेदी, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, पं. हरिश्चन्द्र विद्यालंकार आदि प्रमुख विद्वान हैं। स्वामी डा. सत्यप्रकाश सरस्वती एवं डा. सत्यकाम विद्यालंकार जी ने चारों वेदों का अंग्रेजी में अुनवाद किया है। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी ने भी सामवेद पर भाष्य किया है। पं. विश्वनाथ विद्यालंकार, आचार्य डा. रामनाथ वेदालंकार, डा. सत्यप्रकाश जी तथा स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी का तो हमें सान्निध्य भी प्राप्त रहा है। यह सभी वेद भाष्यकार पुरुष ही हैं। मध्यकाल में हमारे आचार्यों ने अज्ञानता वा स्वार्थ के कारण समाज की सभी स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन के अधिकार से वंचित कर दिया था और उनके वेदाध्ययन करने पर अनेक अनुचित दण्डात्मक विधान किये थे जिनसे मुख्यतः नारी जाति में वेदों के अध्ययन व श्रवण की परम्परा पूर्णतयः बन्द हो गई थी। मध्यकाल व उससे पूर्व किसी वेदों की भाष्यकार विदुषी महिला का नाम इतिहास में पढ़ने को नहीं मिलता। कुछ वेद मन्त्रों के अर्थों की साक्षातकत्री अवश्य ही कुछ ऋषिकायें हैं परन्तु वेदों के भाष्यकारों में एक वा अधिक स्त्रियों के नाम भी अवश्य होने चाहियें, ऐसा हमें लगता था।

हमने अपने मित्रों व कुछ लेखों के माध्यम से बहिन सूर्यादेवी जी सहित किसी विदुषी बहिन द्वारा चार में से किसी एक व अधिक का भाष्य करने की अपनी इच्छा व्यक्त की थी। बहिन सूर्यादेवी जी व्यस्त रहती हैं, अतः वह इस कार्य में प्रवृत्त नहीं हो सकी थीं। अजमेर में दिनांक 4 से 6 नवम्बर, 2016 के ऋषि मेले के दूसरे दिन हमें बहिन जी से संक्षेप में बातचीत करने का अवसर मिल ही गया तो अनेक बातों के साथ हमने उन्हें किसी एक वेद का भाष्य करने के कार्य को भी ध्यान में रखने का निवेदन किया। इस बार बहिन जी ने हमें इस विषय पर गौर करने वा ध्यान देने की बात कही है। हमें लगता है कि यह उनकी योग्यता का सबसे अधिक उपयोग हो सकता है और वह इसे अवश्य करेंगी। यदि बहिन जी इस कार्य में प्रवृत्त हो जाती हैं और ईश्वर की कृपा से यह कार्य पूरा हो जाता है तो हम पौराणिक जगत को यह सन्देश दे सकते हैं कि तुम्हारें आचार्यों ने जिस मातृशक्ति को वेदाध्ययन से वंचित कर दिया था, उसी वेदाध्ययन द्वारा ऋषि दयानन्द भक्त व उनकी अनुयायी एक स्त्री, बहिन व मातृशक्ति ने वेदों का भाष्य कर तुम्हारी उस मान्यता को धराशायी कर दिया है। इससे हमारे गुरुकुल की योग्य छा़त्राओं को भी भविष्य में वेद और वेद विषयक प्रमुख ग्रन्थों पर टीका आदि लिखने की प्रेरणा मिलेगी। महर्षि दयानन्द जी यही चाहते थे कि सभी मनुष्यों को वेदाध्ययन का अवसर मिले और वह अधिक से अधिक इस कार्य में प्रवृत्त होकर कुछ ऐसा कार्य करें जिससे वेदाज्ञा **‘‘कृण्वन्तों विश्वमार्यम्”** के उद्देश्य में प्रगति होकर वह भविष्य में पूरा हो सके। यदि संसार से अविद्या का समूल उच्छेद करना है तो वेदाध्ययन को जन-जन में प्रवृत्त करना ही होगा। विज्ञान ने जिस प्रकार उन्नति करते हुए नाना प्रकार के कम्प्यूटर और विभिन्न सुविधाओं से सज्जित मोबाइल फोन आदि अनेकानेक सुविधाजनक यन्त्र वा वस्तुओं का निर्माण किया है, उसी प्रकार आर्यसमाज द्वारा प्रभावशाली रूप से जन-जन में वेद प्रचार करते रहने से वह समय अवश्य आ सकता है कि अब अविद्या अपनी समाप्ती पर आ जाये, अविद्याजन्य सभी मत-मतान्तर समाप्त हो जायें और लोग वैदिक मान्यताओं को जानकर इस विचारधारा को ही अपने जीवन का उद्देश्य व आचरण स्वीकार करें।

अजमेर में देहरादून से हमारे वरिष्ठ आदरणीय मित्र और वैदिक विद्वान श्री कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री भी साथ गये थे। हमने बहिन जी से वार्तालाप करने के साथ कुछ चित्र भी लिये। भविष्य में क्या होना है, हम नहीं जान सकते। महर्षि दयानन्द के सन् 1863 में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश के समय भी किसी ने यह अनुमान नहीं किया था कि कोई व्यक्ति आकर वेदों का उद्धार व जन-जन में वेदों का प्रचार करेगा। स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार दिलायेगा। सामाजिक भेदभाव और जन्मना जाति व्यवस्था पर तीव्र प्रहार करने के साथ मूर्तिपजा, कब्रपूजा, व्यक्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, अनमेल व बेमेल विवाह का विरोध कर उन्हें ज्ञान व तर्क के आधार पर पराजित करेगा। मत-मतान्तरों की मिथ्या व असत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों का खण्डन कर सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों से परिचित करायेगा। जैसे तब अनुमान नहीं था वैसे ही हम अब भी भविष्य का अनुमान नहीं लगा सकते। हमसे जो हो सकता है, उसे हम अधिक से अधिक व अच्छे से अच्छा करने का प्रयास करें और शेष के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें। हमें लगता है कि सच्चे मन से की गई प्रार्थना व्यर्थ नहीं जायेगी। ईश्वर उसे अवश्य सुनेगा और यथा समय पूरी भी करेगा। इसी के साथ हम लेखनी को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

ओ३म्

**‘मांसाहार से नाना दुखों, रोग व अल्पायु की प्राप्ती तथा शाकाहार**

**से सुख, आयु, बल व बुद्धि की वृद्धि सहित परजन्म में उन्नति’**

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

मांसाहार से कुछ निश्चित हानियां होती हैं। कृपया निम्न हानियों पर दृष्टि डालने का कष्ट करें:



1- मांसाहार से अनेकानेक साध्य व असाध्य रोग होते हैं।

2- मांसाहार से आयु घटती है।

3- मांसाहार से मनुष्य के स्वभाव में हिंसा व क्रोध उत्पन्न होता है।

4- मांसाहार करने वाले को योग सिद्ध नहीं हो सकता।

5- मांसाहारी ईश्वर का भक्त व उपासक न होकर ईश्वर का अपराधी होता है।

6- मांसाहारी की बुद्धि वृद्धि के स्थान पर क्षीणता को प्राप्त होती है।

7- भगवान राम व भगवान कृष्ण सहित आचार्य चाणक्य और हमारे सभी ऋषि-मुनियों सहित महाभारतकालीन सभी राजा एव विख्यात योद्धा शाकाहारी थे।

8- 180 वर्षीय भीष्म, युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, धृतराष्ट, विदुर व दुर्योधन आदि भी शाकाहारी थे।

9- रामायणकालीन महाबलवान् बाली, सुग्रीव, हनुमान, अंगद और यहां तक की रावण, विभीषण आदि भी शाकाहारी थे।

10- मांसाहारियों में शाकाहारियों से कम बल होता है। इतिहास में हनुमान, भीम की तुलना में वीर व बलवान या तो हुए ही नहीं या बहुत कम हुए होंगे। आज तो उनके समान बलवान व पराक्रमी कहीं नहीं दीखता।

11- मांसाहार पाप है, अतः इसका परिणाम जन्म-जन्मान्तर में दुःख व महादुःख है।

12- मांसाहारी का पुनर्जन्म मनुष्य रूप में होना सम्भव नहीं है।

13- मांसाहारी को उन पशु योनियों में ही जन्म लेना होगा जिन पशुओं का उसने मांस खाया था। ईश्वर ब्याज व सूद सहित उसे उसके मिथ्याचार का दण्ड देगा।

14- मांसाहारी प्रायः डरपोक होते हैं। शेर हाथी पर सामने से वार नहीं करता। हाथी शाकाहारी है जो एक वृक्ष तक को समूल उखाड़ देता है। शेर को भी मार सकता है।

15- शाकाहारी पशुओं को यदि मांस परोसा जाये तो वह कभी नहीं खायेंगे। मनुष्य पशुओं से भी अधिक नासमझ है।

16- मनुष्य के दांत व आंतों की बनावट शाकाहारी पशुओं के सामन हैं, इससे मनुष्य शाकाहारी सिद्ध है।

17- सभी मांसाहारी पशु अपने पैरों व दांतों से ही दूसरों पर प्रहार करते हैं और कच्चा मांस खाते हैं। कभी कोई मनुष्य पशुओं के समान मांस प्राप्त नहीं करता और न ही उनके समान केवल मांस ही खाता है। जब तक उसे स्वादिष्ट मसालों सहित पकाया न जाये, वह (कच्चा) मांस नहीं खा सकता।

18- मनुष्य को जब रक्तचाप, हुदय आदि अनेक रोग होते हैं तो आधुनिक डाक्टर भी उन्हें मांसाहार करने से रोकते हैं अन्यथा रोग पर नियन्त्रण नहीं किया जा सकता। अतः मांसाहार स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होता है।

19- मांसाहारी हमेशा याद रखे ‘अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्’ अर्थात् मनुष्य को अपने शुभ व अशुभ कर्मों के फल अवश्य ही भोगने पड़ंेगे। शास्त्र में एक स्थान पर यह भी आता है कि जिस प्रकार नया जन्मा हुआ गाय का बच्चा हजारों गावों में अपनी मां को ढूंढ लेता है, उसी प्रकार किया हुआ कर्म उसके कर्ता को जन्मजन्मान्तर में कर्मानुसार भोग कराकर ही समाप्त होता है।

20- शास्त्र में एक स्थान पर यह भी कहा गया है कि जितने रोगी, अपंग, असहाय व दुःखी लोग हमारे सामने आते हैं, वह हमें यह शिक्षा देते हैं कि ‘तुम अच्छे कार्य करो नहीं तो तुम्हारी दशा भी हमारे समान होगी।‘ इन शब्दों में गहन ज्ञान समाहित है ऐसा हमे लगता है।

21- हमने स्कूल में एक कहानी पढ़ी थी। एक बार जंगल में एक शेर को कांटा चुभा। वह ढूंढता हुआ जंगल में निकट के एक मनुष्य के पास गया। मनुष्य शेर को देख कर घबरा गया। उसने देखा कि शेर बार बार अपने पंजे को उठा रहा है। उसकी नजर उसके पैर पर गई तो देखा कि उसे कांटा चुभा है। उस मनुष्य ने डरते डरते उसका कांटा निकाल दिया। इसके बाद शेर वहां से चला गया। बाद में वह मनुष्य किसी चोरी के अपराध में पकड़ गया। न्याय रूप में उसे एक भूखे शेर के पिंजरे में छोड़ा गया। वह व्यक्ति डरा सहमा था कि शेर उसे खा जायेगा। बहुत देर बाद उसने आंखे खोली तो देखा कि शेर उसके पैर चाट रहा है। उस व्यक्ति ने देखा कि यह वही शेर था जिसके पैर का उसने कांटा निकाला था। पशुओं की कृतज्ञता की यह कथा है। इससे यदि शिक्षा नहीं लेंगे तो अनुमान भी नहीं लगा सकते कि हमें कितने दुःख भोगने होंगे।

इस विषय में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। मांसाहार छोड़िये और शाकाहार अपनाईये क्योंकि शाकाहारी भोजन ही सर्वोत्कृष्ट भोजन है। यह बल, आयु और सुखों का वर्धक है। इससे परजन्म में उन्नति होने से इस जन्म से भी अच्छा मनुष्य जीवन मिलने की सम्भावना है। मनुष्य शाकाहारी प्राणी है, इसका एक प्राण भी दे देते हैं। सभी शाकाहारी पशु मांसाहारियों पशुओं की गन्ध व आहट से ही दूर भाग जाते हैं परन्तु वही पशु मनुष्य को देखकर उसके पास आते हैं। ईश्वर ने पशुओं को यह ज्ञान दिया हुआ है कि कौन मांसाहारी है और कौन शाकाहारी है। इसे पशु जानते व समझते हैं। पशुओं को इस ईश्वर प्रदत्त ज्ञान के अनुसार पशु मनुष्य को शाकाहारी वा अपना रक्षक जानकर उसके पास आते हैं। वह जानते व समझते हैं कि मनुष्य उनकी रक्षा करेंगे। इसके बाद भी यदि मनुष्य मांसाहार करता है तो वह विश्वासघाती सिद्ध होता है। इस पाप से सभी को बचना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज को अपनाइये। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर आप अपने सभी कर्तव्यों का सत्य ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसी के साथ इस विषय को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

-**मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**